

DA (III)

Paper II, Social Psychology

7-10/20
 नरदि सुक्ति में का अर्थ एवं व्याख्या (Meaning and explanation of Stereotypes)

नरदि सुक्ति में सर्वप्रथम 1922 में थॉमस किपिंग ने प्रयोग किया था। यह एक सुविर्ण वर्गीकरण का नाम था जिसमें कि लड़के साथ व्यक्तियों की अन्य लक्षणों के बारे में कोई प्रवृत्ति रखी हो वे जादू का आकार में रहते हैं इनके सामर्थ्य का (Generalization) का गुण पाया जाता है।

यह एक सिद्धांत प्रत्यय है कि लड़के धरनाओं का सामर्थ्य का वर्गीकरण प्रस्तुत किया जाता है इनके साथ लचीलता या अलचीलता जुड़ी होती है इनकी उत्पत्ति में जादू परिस्थितियों का कार्य नहीं करता है इसकी व्याख्या निम्न प्रकार है कि यह जादू का अर्थ है।

(1) यह एक सिद्धांत प्रत्यय है

(2) यह किसी धरनाओं का सामर्थ्य का वर्गीकरण प्रस्तुत करता है।

(3) इनमें लचीलता या अलचीलता जुड़ी होती है।

(4) जादू परिस्थितियों नरदि सुक्ति का उत्पत्ति में कार्य नहीं करता है।

- 1) इनके प्रमुख विचारों का व्यवहार व्यवस्था के संदर्भ में होते हैं।
- 2) यदि व्यक्ति सच्च या आधारित नहीं वेदा ही (17) के तुर काया का परिचय करवा करके कार्य है।
- 3) यह पूर्वधारणा या आधारित इच्छा कार्य करती है।

व्यक्ति के कुछ व्यक्ति विशेष गुण कारण विद्या प्रयोग के आधार पर व्यक्ति का वर्गीकरण का है। उदाहरण के लिए मुसलमान हिंदु आदि का वर्गीकरण का कार्य करती है। व्यापारी को कर्म, कारीबी को कर्म, कर्म, व्यापारियों को पश्चिमी, अमीरों को धूर्त आदि कहा जाता है।

उपरोक्त तथ्यों के आलोक में व्यक्ति को विशेषतः निम्नलिखित 4 सामाजिक प्रतिभा (Socially defined) की श्रेणियों में बांटा जा सकता है।
 1) अमीरों की श्रेणी में वे लोग शामिल हैं जो अमीरों का एक प्रतिभा है। उनके आधार पर उनमें शीलगुण पाये जाते हैं। आस्था बुद्धिमान, दायिम कथकलन, मुसलमान कथकलन हैं।

2) अमीरों का एक प्रतिभा है (widely agreed)। यह श्रेणी में वे लोग शामिल हैं जो अमीरों का एक प्रतिभा है। उनके आधार पर उनमें शीलगुण पाये जाते हैं। आस्था बुद्धिमान, दायिम कथकलन, मुसलमान कथकलन हैं।

आपेक्षात्मक सिद्धि (Relativity) के अभाव में हमें ही संदिग्धता का अभाव है। हमें जानने का उद्देश्य है कि वास्तविकता में क्या परिवर्तन हो रहे हैं।

सकारात्मक मातृकारण (Positive reinforcement) - संदिग्धता को बढ़ावा देने का एक तरीका है।

सकारात्मक संदिग्धता को बढ़ावा देने का एक तरीका है।

अतिरंजित साम्यता (Exaggerated generalization) - संदिग्धता को बढ़ावा देने का एक तरीका है।

संदिग्धता को बढ़ावा देने का एक तरीका है।

Kumar Patel
Assistant Professor
Dept. of Psy.
Maharaja College, Ara